रामकृष्ण मिशन आश्रम, दिव्यायन कृषि विज्ञान केन्द्र, मोराबादी, राँची-8.

संगीत प्रतियोगिता

स्तव भजनांजलि पुस्तक से श्रीरामकृष्ण एवं विवेकानन्द द्वारा गाये गए भजन

क्र.सं.	भजन	रचयिता	ताल एवं राग	पृष्ठ सं.
1.	अभय पदे प्राण सौंपेछि	रामप्रसाद सेन	प्रसादी – एकताल	68
2.	आमि दुर्गा दुर्गा बले	. . . . .	भीम पलासी – कवाली	76
3.	एमनि महामायार माया	राजा नवचन्द्र	मनोहरसाही – झपताल	80
4.	के जाने मन काली	रामप्रसाद सेन	प्रसादी – एकताल	68
5.	गया गंगा प्रभासादि	. . . . .	परजबहार – झपताल	66
6.	चिन्तय मम मानस हरि	त्रैलोक्यनाथ सान्याल	कीर्तन – एकताल	116
7.	जतने हृदये रेखो	कमलाकान्त चक्रवर्ती	कलिंगड़ा – झपताल	64
8.	डूब डूब डूब रूप सागरे	कबीर	बाउल – खेमटा	203
9.	डूब दे रे मन काली बोले	रामप्रसाद सेन	प्रसादी – एकताल	82
10.	दोष कारो नय गो मा	दाशरथि राय	भीमपलासी – एकताल	76
11.	नामेरि भरसा केवल	कमलाकान्त चक्रवर्ती	कीर्तन – झपताल	51
12.	मजलो आमार मन भ्रमरा	कमलाकान्त चक्रवर्ती	सिंधुखमाज – झपताल	62
13.	मन रे कृषिकाज जाना	रामप्रसाद सेन	प्रसादी – एकताल	82
14.	मा त्वं हि तारा	. . . . .	भैरवी – एकताल	60
15.	सकलि तोमार इच्छा	राजा नवचन्द्र	मनोहरसाही – झपताल	60
16.	सदानन्दमयी काली	कमलाकान्त चक्रवर्ती	मिश्र सिंधु – झपताल	62
17.	सीतापति रामचन्द्र	तुलसीदास	झिंझिट – एकताल	90
18.	हृदि बृन्दावने वास	दाशरथि	कीर्तन – दादरा	117
19.	अन्तरे जागिछो गो मा	त्रैलोक्यनाथ सान्याल	सूरत मल्हार – झापताल	54
20.	आचाण्डाला प्रति हतरयो	स्वामी विवेकानन्द		118
21.	आमाय दे मा पागल करे	त्रैलोक्यनाथ सान्याल	बाउल – एकताल	70
22.	केशव कुरु करुणादीने	गिरीशचन्द्र घोष	देश – एकताल	117
23.	जाबे कि हे दिन आमार	बेचाराम चट्टोपध्याय	मूलतान – एकताल	208
24.	नाहि सूर्य नाहि ज्योति	स्वामी विवेकानन्द	बागेश्री – आड़ा	204
25.	निबिड़ आँधारे मा	त्रिलोक्यनाथ सान्याल	बागेश्री – आड़ा ठेका	71
26.	पी ले रे अवधूत	. . . . .	विहाग खमाज – त्रताल	191
27.	प्रभु मोरे अवगुन चित न धरो	सूरदास	भैरवी – त्रिताल	103
28.	मन चलो निज निकेतने	अयोध्यानाथ पाकड़ाशी	सूरत मल्लार – एकताल	210
29.	मोको कहाँ तू ढूँढे	कबीरदास	पीलू बरवा – कहरवा	190
30.	सुन्दर तोमारि नाम	पुंडरीकाक्ष मुखोपाध्याय	काफी – झापताल	205
	अन्य भजन			
31.	श्रीरामचन्द्र कृपालु भजुमन	तुलसीदास	हमीर – तेवरा	86
32.	भज मन राम चरण सुखदायी	तुलसीदास	पहाड़ी – तीनताल	93
33.	अखियाँ हरि दरसन की प्यासी	सूरदास	आसावरी – तीनताल	104

34.	जो भजे हरि को सदा	स्वामी ब्रह्मानन्द	भैरवी – रूपक	109
35.	अबकी टेक हमारी	सूरदास	काफी – तीनताल	109
36.	पायो जी मैंने राम रतन धन पायो	मीराबाई	पहाड़ी – त्रिताल	87
37.	रघुवर तुमको मेरी लाज	तुलसीदास	पीलू – तीनताल	87
38.	प्रभु मैं गुलाम, मैं गुलाम तेरा	कबीरदास	आसावरी – एकताल	191
39.	तुझसे हमने दिल से लगाया	'जफर'	गजल – कहरवा	190
40.	उठ जाग मुसाफिर भोर भई		गजल – कहरवा	193
41.	गाइये गणपति जगबन्दन	तुलसीदास	भूपाली – तीनताल	187
42.	गुरु कृपांजन पायो मेरे भाई	कबीरदास	यमन – त्रिताल	94
43.	जाऊँ कहा तजि चरन तुम्हारे	तुलसीदास	धनाश्री – तीनताल	92
44.	जाके प्रिय न राम वैदेही	तुलसीदास	खमाज – तीनताल	94
45.	झीनी झीनी बीनी चदरिया	कबीरदास	देस – तीनताल	189
46.	घूंघट का पट खोल	कबीरदास	दरबारी कानड़ा – तीनताल	189
47.	बीत गये दिन भजन बिना रे	कबीरदास	तिलक कामोद – तीनताल	188
48.	मेरो मन रामहि राम रटैरे	मीराबाई	धनाश्री – तीनताल	88
49.	सुने री मैंने निरबल के बल राम	सूरदास	भैरवी – तीनताल	88
50.	राम नाम रस पीजै मनुआँ	मीरबाई	काफी – तीनताल	92
51.	स्याम मने चाकर राखो	मीराबाई	माँड़ – तीनताल	102

स्वामी विवेकानन्दजी की गाये हुए कुछ रवीन्द्रसंगीत की सूची :-

1.	महासिंहासने बोसे सूनिछो, हे विश्वपति	(गीतवितान, अखण्ड, पृष्ठ 828)
2.	तोमारेई करियाछि जीवनेर ध्रुवतारा	(गीतवितान, अखण्ड, पृष्ठ 318)
3.	आमरा जे शिशु अति	(गीतवितान, अखण्ड, पृष्ठ 827)
4.	ताँहारे आरति करे चन्द्र तपन, देव मानव बन्दे चरण	(गीतवितान, अखण्ड, पृष्ठ 187)
5.	मोरि लो मोरि, आमाय बाँशिते डेकेछे के	(गीतवितान, अखण्ड, पृष्ठ 296)
6.	दुई हृदयेर नदी एकत्रे मिलिलो जोदि	(गीतवितान, अखण्ड, पृष्ठ 609)
7.	गगनेर थाले रबि चन्द्र दीपक ज्वले	(गीतवितान, अखण्ड, पृष्ठ 827)
8.	दिवानिशि करिया जतन/ हृदयेते रोचेछि आसन	(गीतवितान, अखण्ड, पृष्ठ 828)
9.	एकि ए सुन्दर शोभा ! की मुख हेरि ए !	(गीतवितान, अखण्ड, पृष्ठ 218)
10.	अन्तरे जागिछो अन्तरयामी	(गीतवितान, अखण्ड, पृष्ठ 108)
11.	शुभदिने एसेछे दोंहे	(गीतवितान, अखण्ड, पृष्ठ 610)
12.	जगतेर पुरोहित तुमि	(गीतवितान, अखण्ड, पृष्ठ 862)
13.	सखी, आमारि दुयारे केनो आसिल	(गीतवितान, अखण्ड, पृष्ठ 330)
14.	तोमारि तरे, माँ, सपिनू ए देह	(गीतवितान, अखण्ड, पृष्ठ 819)
15.	सत्य मंगल प्रेममय तुमि	(गीतवितान, अखण्ड, पृष्ठ 179)
16.	तुमि बन्धु, तुमि नाथ	(गीतवितान, अखण्ड, पृष्ठ 34)
17.	जोगी हे, के तुमि हृदि-आसने!	(गीतवितान, अखण्ड, पृष्ठ 777)
18.	काली काली बल रे आज	(गीतवितान, अखण्ड, पृष्ठ 638)
19.	दुख दुर कोरिले, दरशन दिये	(गीतवितान, अखण्ड, पृष्ठ 837)